श्रीगोरखनाथ मन्दिर में 'श्रीराम–कथा ज्ञान–यज्ञ'

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 22 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत 'श्रीराम–कथा ज्ञान–यज्ञ' का शुभारम्भ भव्य शोभा–यात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ। गोरक्षपीठाधीश्वर **महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज**, माननीय मुख्यमंत्री, उ0प्र0, काशी से पधारें **कथाव्यास जगदगुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** सहित साधु–संतो, सपरिवार यजमानगणों एवं भक्त–श्रद्धालुओं ने श्री वाल्मीकि रामायण की शोभा–यात्रा के साथ महायोगी गुरू श्री गोरखनाथ का पूजन–अर्चन, युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्र–सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित सभी प्रमुख समाधियों पर पुष्पार्चन किया। शोभा यात्रा दिग्विजयनाथ स्मृति साभागार में पहुंची। अखण्ड ज्योति के स्थापित होने एवं दोनो ब्रह्मलीन महाराज जी की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि के साथ श्रीराम कथा प्रारम्भ हुई। श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा कि श्री गोरक्षपीठ की समृध परम्परा को नई दिशा देने वाले युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज भारतीय संस्कृति एवं संतो–योगियों की परम्परा के दिव्याकाश में चमकते हुए नक्षत्र हैं। उनका व्यक्तित्व कृतित्व तत्कालीन देश काल और परिस्थितियों की चुनौतियों का समाधान करते हुए देश, समाज तथा धर्म को समर्पित था। उनकी पूर्ण स्मृति में प्रति वर्ष सप्ताह भर धार्मिक आध्यात्मिक आयोजनों के साथ सम सामयिक विषयों पर सम्मेलन आयोजित कर हम प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

उन्होने आगे कहा कि भारत की समृद्ध सनातन हिन्दु धर्म की परम्परा में वाल्मीकि रामायण में अपना विशिष्ट है। श्रीराम धर्म के साक्षात् विग्रह है। वह कर्तव्य, नीति, नैतिकता, मर्यादा के प्रतीक है। श्रीराम के प्रति भारत में जब तक आगाध आस्था एवं अटूट श्रद्धा रहेगी दुनिया की कोई ताकत भारत का बाल भी बांका नहीं कर सकती। श्रीराम भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ है। विश्व–मानवता को सत्य, शान्ति, लोक–कल्याण का वास्तविक मार्ग श्रीराम का आदर्श ही दिखा सकता है। ऐसे विराट व्यक्तित्त्व का महापुरूष जिस राष्ट्र समाज एवं संस्कृति की थाती हो उसका माथा गौरव से उठा रहेगा। किन्तु दुर्भाग्य से श्रीराम जिसे देश के पूर्वज हैं वहाँ श्रीराम का नाम लेने में संकोच करने वालों की कमी नहीं। जब कि इण्डोनेशिया, थाइलैण्ड, श्रीलंका जैसे अनेक देश उपासना पद्धति से उपर उठकर श्रीराम को अपना पूर्वज मानते हैं, उनकी जीवन–लीला से प्रेरणा ग्रहण करते हैं और गौरवानुभूति की खुली अभिव्यक्ति करते हैं।

उन्होने आगे कहा कि महर्षि वाल्मिकि के राम ने जाति–पाति, छुआ–छूत, ऊँच–नीच, जैसी कुप्रवृत्तियों की सभी सीमाओं को तोड़कर अखण्ड भारत राष्ट्र को खड़ा किया। एक ऐसी राज्यव्यवस्था दी जो अब तक आदर्श राज्य व्यवस्था के रूप में जानी जाती है। दुनिया में जब भी जहाँ भी लोक–कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना की जाती है 'राम–राज' आदर्श बन जाता है। इसीलिए श्रीराम के प्रतिसनातन काल से भारत में आस्था अटल है। श्रीराम की कथा भारत राष्ट्र की एकता–अखण्डता का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रीराम कथा मात्र लौकिक जीवन का मार्ग ही प्रशस्त नहीं करती अपितु वह पारलौकिक जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करती है। हर कालखण्ड में श्रीराम नाम के जप और प्रभाव से मुक्ति का द्वार खुलता है।

श्रीराम कथा मानव के व्यक्तित्व, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीयता जीवन की हर समस्याओं एवं चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करती है। परिणामतः दुनिया में लगभग हर भाषाओं में श्रीराम कथा लोकप्रिय है। श्रीराम कथा को विश्व भर में लोकप्रिय बनाने का श्रेय महर्षि वाल्मिकि को है।

उन्होंने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की पावन कथा युगो–युगो से समाज एवं राष्ट्र की समस्त समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है। मानव जीवन की सम्पूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का अचूक रामवाण है **श्रीराम कथा।** श्रीराम का जीवन भारतीय संस्कृति का प्रतिमान है और यही हमारे लिए अनुकरणीय है। आज भारत के सामाजिक–राष्ट्रीय जीवन में जो समस्याएँ मुँह बाये खड़ी है, हम मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवनादर्शन को स्वीकार कर उनका समाधान कर सकते है। पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्रीराम कथा अमृत वर्षा में सराबोर भक्तगण इस कथा से अपने पारिवारिक–सामाजिक–राष्ट्रीय जीवन का मार्ग प्रशस्त करेंगे तो यह कथा ज्ञान यज्ञ सफल हो जायेगी। उन्होनें कहा कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम एक ऐसे देवत्व स्वरूप महामानव है जिनमें धर्म का साक्षात् स्वरूप प्रतिष्ठित है। पाश्चात्य विद्वानों ने धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान किया जबकि हमारी परम्परा में धर्म पूजा–पद्धति अथवा उपासना–पद्धति नही। धर्म एक शास्वत अवधारणा है जो नैतिकता, कर्तव्य परायणता एवं सदाचार की प्रेरणा देता है। धर्म के व्यापक स्वरूप पर ही भारत जैसे राष्ट्र एवं समाज का स्वरूप टिका है। वास्तव श्रीराम कथा राष्ट्र की कथा है। श्रीराम का आदर्श शास्वत है और इसलिए हर भारतीय की आस्था के केन्द्र बिन्दु हैं श्रीराम। माता एवं मातृभूमि के प्रति दायित्वबोध श्रीराम के जीवन का प्रमुख आदर्श है। श्रीराम कथा में ही सामाजिक समरसता का भाव निहित है जहॉ सुग्रीव और सबरी में कोई भेद नहीं। राम की विजय सामाजिक एकता की विजय है, पारिवारिक एकता की विजय है जबकि रावण की पराजय सामाजिक एवं पारिवारिक फूट का परिणाम है। आज हम अपने जिन दो गुरुजनों की पुण्यतिथि पर श्रीराम कथा का आयोजन कर रहे है इसकी प्रासंगिकता यही है कि उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र धर्म एवं समाज धर्म को ही समर्पित कर दिया था। सेवा को ही जिन्होंने अपना मिशन बनाया और लोक कल्याण जिनके जीवन का साध्य था।

दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्याधाम से पधारे महन्त सुरेशदास जी महाराज ने कहा कि श्रीराम ऐसे राजा हुये है जो पहले समाज का कार्य करते थे, फिर परिवार का कार्य करते थे और तब वे अपना कार्य करते थे। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का उत्तर प्रदेश में शासन भी राम के इसी आदर्श पर चल रहा है। सबकुछ करते हुये गोरक्षपीठ की परम्परा की रक्षा और सम्मान को अक्षुण्य रखना उनकी इसी विशेषता का प्रमाण है।

इसी के साथ काशी से पधारें **कथाव्यास जगदगुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** के मुखारबिन्दो से दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में श्रीराम कथा की अमृतवर्षा प्रारम्भ हो गई। श्रीराम भारत के पर्याय है। श्रीराम के बिना भारत में भारतवर्ष कहाँ। भगवान की इस पूरी कथा में कुल पॉच लीलायें – बाललीला, विवाहलीला, वनलीला, रणलीला और राजलीला है। यह कथा वेद भगवान के उपदेश और नारदमुनि द्वारा वाल्मीकि जी को प्रेरित करते के साथ प्रारम्भ होती है। वाल्मीकि जी ने परमात्मा के 16 गुणों से सम्पन्न अवतार वाले महापुरुष के बारें में श्रीनारद जी से पूछा और नारद जी ने इक्ष्वाकुवंशी श्रीराम के गुणों का वर्णन किया। फिर तमसा नदी के तट पर वाल्मीकि जी ने 24 हजार श्लोकों में श्रीरामायण ग्रन्थ की रचना की। भारतीय संस्कृति के तीन प्राण–ग्रन्थ हैं – श्रीरामायण, श्रीमद्भगवतगीता और श्रीमद्भागवत पुराण। तीनों ग्रन्थों का सार है भगवत्शरणागति।

हरिभजन के साथ कथा श्रीराम के महत्व पर केन्द्रित होती है। कथाव्यास कहते हैं कि श्रीराम का अवतार ही मानवमूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये हुआ था। अतः श्रीराम कथा भी मानवमूल्यों की पुर्नस्थापना करती है। कथा हमारे जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है, हमारे जीवन को दिशा देती है, समाज एवं राष्ट्र की एकता और अखण्डता को मजबूत करती है। कथाव्यास के संगीतमय कथा के साथ भक्तों के सुर एवं वाद्ययंत्रों की ताल के साथ भक्तगणों की तालियों की धारा एक साथ मिलकर सभागार को श्रीरामभक्ति की अमृतवर्षा को साक्षात् बना देती है। कथाव्यास ने आज मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन आदर्शो पर कथा केन्द्रित करते हुए कहा कि श्रीराम मर्यादा पुरूषोत्तम है। वे करूणा निधान है। वाल्मीकि रामायण की श्रीराम कथा वास्तव में करूणा की कथा है। यह करूणा का ग्रन्थ है। राम का जीवन मानव कल्याण और जगद् कल्याण का आधार है। उन्होंने श्रीराम के साथ–साथ राक्षसी प्रवृत्ति के प्रति रावण एवं उसकी श्रीलंका की अभ्युदय की कथा पर भी प्रकाश डाला।

कथा व्यास ने कहा कि श्रीराम कथा मानव जीवन का दिव्य विज्ञान है। वह सदा प्रासंगिक रही है और आगे भी प्रासंगिक बनी रहेगी। जब तक मानवता के सिद्धान्त अटल रहेगे तब तक श्रीराम कथा का महत्व बना रहेगा। श्रीराम कथा का महत्व महर्षि भारद्धाज के आश्रम तीर्थ राजप्रयाग में याज्ञवर्त में समझा गया था। यही श्रीराम कथा सुनने भगवान शंकर महर्षि अगस्त के आश्रम प्रभुचेरी (पाण्डुचेरी) पहुंचे थे। शिव के साथ पहुंची सती कथा न सुन सकीं तद् पश्चात् सती के मार्ग में आने की बाधाएं प्रारम्भ हो गई। और इसी के साथ भगवान् शिव की वन गमन के समय जगतजननी सीता के वियोग में भगवान श्रीराम से भेट, सती की शंका और फिर सती से भगवान शिव का संकल्प कथा का केन्द्र बनती है।

कथा श्रीराम के जीवन आदर्शो को उद्घाटित करती हुई राम और सीता के वियोग की आध्यात्मिक व्याख्या पर केन्द्रित होती है और कथा में जगद्जननी जानकी का जीवन चरित्र को प्रमुखता के साथ स्थान मिलता है। कथावाचक कहते है करूणानिधान और जगद्जननी मॉ सीता के बीच तीन बार वियोग का संयोग बनता है। तीनों बार मॉ सीता बड़े उद्देश्यों के लिए या यह कहें समाज परिवर्तन का आधार बनती है। तीनों वियोगों में मॉ सीता का जो स्वरूप उभरता है वह भारतीय संस्कृति की उस विशेषता का सूचक है जो दुनिया में कहीं नही दिखता ।

कथावाचक श्रीराम के राजा के स्वरूप की ओर कथा को मोड़ते है और कहते है कि श्रीराम धरती के श्रेष्ठतम शासक हैं। वे राज्य के प्रतीक हैं और इसलिए रामराज्य लोक कल्याणकारी राज्य का पर्याय बना। श्रीराम ने ऐसे राजा का आदर्श प्रस्तुत किया जिसके लिए जनता का हित सर्वोपरि था। तत्पश्चात अपनों का हित था और अपना हित गौड़ था। राजा के रूप में श्रीराम का स्वभाव वज्र से भी कठोर और फूल से भी अधिक कोमल है। कथावाचक कहते है की वाल्मीकि रचित रामायण को स्वंय श्रीराम ने लवकुश के मुख से सुना था। कथा में भगवान के

पुण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चौथी पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल 23 सितम्बर,2018 को प्रातः 10.00 बजे **'लोक कल्याण भारतीय संस्कृति की विशेषता है'** विषयक संगोष्ठी। अपराह्न 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा' का आयोजन**

श्रीरामावतार की पृष्ठभूमि तैयार करते हुऐ
कथा विश्राम लेती।

कथा में महन्त राममिलनदास जी महाराज, उड़ीसा से पधारे महन्त शिवनाथ जी, वाराणसी से पधारे महामण्डलेश्वर श्री संतोषदास जी, रामकोट अयोध्या से पधारे जगद्गुरू राघवाचार्य जी, श्री बड़ेभक्तमाल अयोध्याधाम से पधारे **श्री अवधेशदास जी महाराज**, स्वामी सुग्रीवकिला अयोध्या से पधारे स्वामी विश्वेश प्रपन्नाचार्य जी, बड़ौदा से पधारे महन्त गंगादास, अयोध्या से पधारे महन्त धर्मदास जी, हरिद्वार से पधारे महन्त शान्तिनाथ जी, देवीपाटन शक्तिपीठ, तुलसीपुर से पधारे **योगी मिथिलेशनाथ जी**, कालीबाड़ी के **महन्त रवीन्द्रदास जी**, तपसीधाम हरैया से पधारे स्वामी जयवख्शदास जी, हनुमान मन्दिर के **महन्त प्रेमदास** जी, चचाईराम मठ के **महन्त पंचानन पुरी**, पूर्व कुलपति **प्रो0 यू0पी0 सिंह आदि उपस्थित थे।**

व्यासपीठ का पूजन अनुष्ठान के यजमानगण सपरिवार सहित सपरिवार सहित श्री ईश्वर मिश्र, महापौर श्री सीताराम जायसवाल, श्री जवाहरलाल कसौधन, श्री पुष्पदन्त जैन, श्री ओम प्रकाश जालान, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री गंगा राय, श्री अरूण कुमार अग्रवाल, श्री अतुल सर्राफ, श्री विकास जालान, श्री संतोष कुमार अग्रवाल, श्री जीतेन्द्र बहादुर चन्द, , श्री रेवती रमणदास अग्रवाल, श्री महेश पोद्दार, श्री अवधेश सिंह, श्री चन्द्र बंसल, ब्लाक प्रमुख श्री बृजेश यादव, मा0 विधायक श्री महेन्द्रपाल सिंह, श्री मारकण्डेय यादव, श्री गोरख सिंह, श्री ओम प्रकाश कर्मचन्दानी, श्री संजय गुप्ता, श्री कृष्ण मोहन, श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री प्रदीप जोशी, श्री अजय सिंह, श्री विनोद कुमार राना इत्यादि ने किया।

कथा के नौ मंत्र

1. **धर्म और धैर्य का परित्याग कभी भी न करें।**
2. **श्रीरामचरित मानस काव्य है, और रामायण इतिहास।**
3. **मनव जीवन का दिव्य ज्ञान है, श्रीराम कथा।**
4. **श्रीराम नाम की महिमा अनन्त और प्रभाव अद्भुत है**
5. **श्रीराम कथा का एक–एक अक्षर मानव जीवन के पापों का नाश करने में समर्थ है।**
6. **श्रीराम नाम ही रत्नाकर को वाल्मिकि बना सकता है।**
7. **अपरिमित श्रद्धा, अगाध निष्ठा एवं शाश्वत विश्वास ही भगवत प्राप्ति का मूल आधार है।**
8. **भारत की नारी का जीवन श्रद्धा, शक्ति और तपस्या की प्रतीक है।**
9. **संत महात्मा रूप से नहीं आचरण से पहचाने जाते हैं।**

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की उन्चासवीं एवं
राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ
श्रद्धांजलि सप्ताह
2018
श्रीराम-कथा
दिनांक - 22 से 28 सितम्बर 2018,
गोरखपुर
प्रकाश

जय श्री राम
श्री गोरखनाथ

जय श्री राम